This question paper contains 2 printed pages.

Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper	: 7925	**GC**
Unique Paper Code	: 12051102	
Name of Paper	: Hindi Kavita (Adikalin Evam Bhaktikalin Kavya)	
Name of Course	: B.A. (Hons.) Hindi	
Semester	: I	
Duration	: 3 hours	
Maximum Marks	: 75	

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अमीर खुसरो के काव्य की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

विद्यापति की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। 12

2. कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'मधुमालती' के आधार पर मंझन की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 12

3. सूरदास के पदों में राधा की विरह दशा का मार्मिक चित्रण हुआ है। स्पष्ट कीजिए।

अथवा

मीराबाई की कृष्ण-भक्ति के स्वरूप का विवेचन कीजिए। 12

4. कवितावली में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकार को रेखांकित कीजिए।

अथवा

तुलसीदास की भाव्य-भाषा का विवेचन कीजिए। 12

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) काहे री नलिनी तूँ कुम्हिलाँनीं,
तेरे ही नालि सरोवर पाँनीं।
जल मैं उतपति जल में बास, जल में नलिनीं तोर निवास।
ना तलि तपति न ऊपरी आगि, तोर हेतु कहु कासनि लागि।
कहै कबीर जे उदिक समांन, ते नहीं मुए हँमरे जान।।

अथवा

अधर अमिय-रस भरे सोहाए। पेम बरें हुत रगत तिनाए।
अति सुरंग कोंवल रस भरे। जानहु बिंब मयंकम धरे।
पटतर लाई न जाहिं बखाने। जनु ससि-अमी गारि बिधि साने।
अधर अमीरस भरे अपीऊ। कुंवर जान मोर डोलहिं जीऊ।
वह सो धरी बिधि कब दरसाइहि। जब यह जिउ मोरे घट आइहि।

7

P. T. O.

(ख) अब लौं नसानी, अब न नसैहौं।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं।
पायेइँ नाम चारू चिंतामनि, उर कर तें न खसैहौं।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं।।
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हसैहौं।
मन मधुकर पनकै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं।।

अथवा

जौं न होत सीता सुधि पाई। मधुबन के फल सकहिं कि खाई।।
एहि विधि मन विचार कर राजा। आइ गए कपि सहित समाजा।।
आइ सबन्हि नावा पद सीसा। मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा।।
पूँछी कुसल कुसल पद देखी। राम कृपाँ भी काजु विसेषी।।
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना। राखे सकल कपिन्ह के प्राना।।
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेउ। कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ।। 8

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं **दो** का रचना-कौशल विश्लेषित कीजिए:

(क) गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।।
खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग।
तन मेरो मन पीउ को दोऊ भए एक रंग।। *(सूफी तत्व)*

अथवा

जहाँ-जहाँ पग-जुग धरई। तहिं-तहिं सरोरूह झरई।।
जहाँ-जहाँ झलकाए अंग। तहिं-तहिं बिजुरि-तरंग।।
कि हेरलि अपरूब गोरि। पइठलि हिय-मधि मोरि।।
जहाँ-जहाँ नयन-बिकास। ततहिं कमल-प्रकास।।
जहाँ लहु हास संचार। तहिं-तहिं अमिय-विथार।
जहाँ-जहाँ कुटिल कटाख। ततहिं मदन-सर लाख।। *(प्रतीकात्मकता)*

(ख) जसोदा हरि पालनैं झुलावै।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोई-सोई कछू गावै।
मेरे लाल कौं आउ निदँरिया, काहैं न आनि-सुवावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकों कान्ह बुलावै।
कबहुँक पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुं अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि सैन बतावै। *(बाल सुलभ चेष्टा)*

अथवा

पद बाँध घूँघरयाँ पाच्यांरी।
लोग कह्या मीराँ बावरी, सासु कह्याँ कुलनासाँ री।
विख रो प्यालो राणा भेज्याँ, पीवाँ मीराँ हाँसाँ री।
तण मण वारयाँ परि चरिणामाँ दरसण अमरित प्यास्याँ री।
मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, धारी सरणाँ आस्याँ री। *(भाषा-शैली)*

6×2=12